बाप को याद करना होता, बाप से प्रीत करना
याद की यात्रा को भी कहते प्रीत की यात्रा
विपरीत बुद्धि वाले नाम रूप में फंस जाते
प्रीत बुद्धि वाले किसी देहधारी से प्रीत नही रखते
वो सदा ज्ञानरत्नों का दान करते रहते
माया के ग्रहचारी से बुद्धि की संभाल करनी
बाप से कभी भी रूठना नही
किसी की दी हुई चीज़ पास नही रखनी
अनुभव को आगे बढ़ाते गुणों के अनुभवी मूर्त बनना
अनुभवी मूर्त सदा अविनाशी और निर्विघ्न रहते
वो कभी धोखा खा नही सकते
शुद्ध संकल्पों का स्टॉक ज़मा करना
फरिश्ता होता देह- अभिमान के सूक्ष्म रूप से भी न्यारा

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!